NEERAJ®

नगरीय समाजशास्त्र

(Urban Sociology)

B.S.O.E.-141

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Ved Prakash Sharma*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

नगरीय समाजशास्त्र

(Urban Sociology)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Question Paper—December-2023 (Solved) 1

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

नगरीय समाजशास्त्र : एक परिचय (Introduction Urban Sociology)

1. नगरीय समाजशास्त्रीय : प्रकृति एवं संभावनाएँ 1
(Urban Sociology: Nature and Scope)

2. नगरीकरण एवं नगरवाद 12
(Urbanization and Urbanism)

3. नगर (City) 25

नगरीय समाजशास्त्र : दृष्टिकोण (Perspectives in Urban Sociology)

4. पारिस्थितिक स्थानिक (Ecological-Spatial) 34

5. राजनैतिक अर्थव्यवस्था (Political Economy) 43

6. नगरीय समाजशास्त्र नेटवर्क : दृष्टिकोण 55
(Perspectives in Urban Sociology: Network)

7. सांस्कृतिक (Cultural) 65

प्रवासन, व्यवसाय तथा आवासीय स्थल (Migration, Occupation and Settlements)

8. प्रवासन 72
(Migration)

9. व्यवसाय 88
(Occupation)

10. मलिन बस्ती 100
(Slum)

11. पड़ोस व गेटेड समुदाय 117
(Neighborhood and Gated Communities)

नगरीय क्षेत्र की सांस्कृतिक राजनीति (Cultural Politics of Urban Space)

12. उपभोक्ता, संस्कृति तथा कार्यनिवृत्ति 128
(Consumer, Culture and Leisure)

13. जाति, वर्ग, नृजातीयता व लैंगिकता 140
(Caste, Class, Ethnicity and Gender)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

नगरीय समाजशास्त्र

(Urban Sociology)

B.S.O.E.-141

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. नगरीय समाजशास्त्र के उदय में शिकागो स्कूल के विचार के महत्त्व की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'शिकागो विचारधारा' पृष्ठ-4, प्रश्न 3

प्रश्न 2. नगरीकरण का अर्थ क्या है? भारत में इसकी चुनौतियों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-13, प्रश्न 1

प्रश्न 3. पारिस्थितिकशास्त्र तथा नगरीय समाजशास्त्र कैसे अंत:संबंधित है? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-34, 'नगरीय समाजशास्त्र में पारिस्थितिक की अवधारणाएँ'

प्रश्न 4. नगरीय संदर्भ में, सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकियाँ कैसे समाज को प्रभावित करती है? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-55, 'नगरीय समाजशास्त्र में नेटवर्क की अवधारणा'

प्रश्न 5. मलिन बस्ती क्या है? विभिन्न नगरों में इसके विभिन्न प्रकारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-104, प्रश्न 1 तथा प्रश्न 2

प्रश्न 6. क्या नगरीय जिन्दगी में पड़ोसी का महत्त्व है? इसकी समाजशास्त्रीय प्रासंगिकता की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-117, 'पड़ोस तथा इसकी सामाजिक सार्थकता'

प्रश्न 7. क्या भारत में नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक स्तरीकरण को राजनीति प्रभावित करती है? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-148, प्रश्न 3

प्रश्न 8. विलासिता की संकल्पना को परिभाषित कीजिए। नगर की संरचना में यह क्या भूमिका निभाती है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-130, 'कार्यनिवृत्ति की अवधारणा', पृष्ठ-131, प्रश्न 3

■■

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

नगरीय समाजशास्त्र

(Urban Sociology)

B.S.O.E.-141

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. नगरीय समाजशास्त्र से आप क्या समझते हैं? भारत में यह कैसे उदय हुआ?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'नगरीय समाजशास्त्र का अर्थ', पृष्ठ-3, प्रश्न 2

प्रश्न 2. नगर को परिभाषित कीजिए। इसकी प्रमुख विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-25, 'परिचय', 'नगर, नगर का स्थानिक विन्यास'

प्रश्न 3. नगर पर ई.डब्ल्यू. बर्गेस के प्रमुख विचारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-35, 'बर्गेस का नगर', प्रश्न 2

प्रश्न 4. नगरीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था की प्रासंगिकता की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-44, 'नगरीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था', पृष्ठ-47, प्रश्न 6

प्रश्न 5. नगरवाद तथा संस्कृति के बीच संबंधों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-65, 'नगरीकरण का सिद्धांतीकरण', पृष्ठ-66, प्रश्न 1

प्रश्न 6. नगरीय सामाजिक संरचना पर प्रवसन के प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-75, प्रश्न 1

प्रश्न 7. नगरीय व्यावसायिक संरचना के वर्गीकरण का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-89, 'नगरीय व्यवसायों का वर्गीकरण'

प्रश्न 8. नगरीय समाज को शक्ति और राजनीति किस तरह आकार देती है? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-140, 'नगरीय संदर्भ में शक्ति और राजनीति'

■■

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

नगरीय समाजशास्त्र
(Urban Sociology)

नगरीय समाजशास्त्र : एक परिचय
(Introduction Urban Sociology)

नगरीय समाजशास्त्रीय : प्रकृति एवं संभावनाएँ
(Urban Sociology: Nature and Scope)

1

परिचय

नगरीय समाजशास्त्र के अरबन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के अरबानस से मानी गई है, जिसका अभिप्राय है नगर से जुड़ा हुआ। अरबन शब्द के तहत छोटे शहर एवं महानगर दोनों का समावेश है। यह ग्राम या देहात के एकदम विपरीत है। गाँव का निवासी देहाती कहलाता है, इसके विपरीत नगर का निवासी नगरीय कहलाता है। नगरीय समाजशास्त्र का व्यावहारिक लक्ष्य नगर में विद्यमान सामाजिक व्यवहार के विविध रूपों के निर्धारकों व परिणामों की खोज करना है। नगरीय समाजशास्त्र यह प्रदर्शित करता है कि नगर के जीवन का सामाजिक कार्यों, सामाजिक संस्थानों, संबंधों एवं उन सभ्यताओं पर क्या प्रभाव पड़ा है, जो शहरी रहन-सहन पर आधारित हैं। इसके तहत नगरों के विकास से संबंधित योजनाओं एवं नीतियों का वर्णन किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

नगरीय समाजशास्त्र का अर्थ

नगरीय समाजशास्त्र का स्वरूप बहुविषय है। नगरीय समाजशास्त्र नगर की असंख्य समस्याओं का अध्ययन करता है, जिनका प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से मानवीय संबंधों से जुड़ाव है। ये नगरीय समस्याएं और नगरीय नूतन मूल्य आदर्श और मान्यताएं, समाज की संपूर्ण व्यवस्था को प्रभावित करती हैं। नगरों को जानने के लिए हमें व्यापक सांख्यिकीय स्रोतों की आवश्यकता होगी, जो यह बता सकें कि मानव तत्व क्या हैं। नगरीय समाज आयु एवं जेंडर के आधार पर दूसरे समाजों की भांति भिन्न तरह के होते हैं, लेकिन इनमें विविध प्रकार के समूह, जैसे–आयु, जेंडर पहचान वाले निवास करते हैं, जिनमें अत्यधिक भिन्नताएं होती हैं। इन नगरों में रहने वाले लोग धन, संपत्ति एवं व्यवसाय के आधार पर भिन्न-भिन्न होते हैं। इस प्रकार नगरीय सभ्यता एक प्रकार से जटिल पूँजीवादी सभ्यता है, जिनमें संपूर्ण विश्व के देशों की विभिन्न प्रजातियाँ समाहित हो जाती हैं।

नगरीय समाजशास्त्र का उदय

नगरीय समाजशास्त्र का उदय 20वीं शताब्दी की शुरुआत में औद्योगिक क्रांति के पश्चात् पश्चिमी देशों में समाजशास्त्र की शाखा के रूप में हुआ था। अमेरिका में शिकागो जैसे नगर नगरीय समाजशास्त्र के केंद्र बन गए। औद्योगिक क्रांति के बाद इनमें अत्यधिक परिवर्तन हुए तथा नगरों का विकास हुआ। इसके तहत नगरों की विकास पद्धतियों में उनके सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को सम्मिलित किया गया। मेक्स वेबर तथा जॉर्ज सिमेल जैसे समाजशास्त्रियों ने औद्योगिक क्रांति के पश्चात् नगरीकरण की तीव्र परिवर्तित प्रक्रिया एवं अलगाव पर ध्यान देने का प्रयास किया। नगरीकरण की प्रक्रिया के तीव्र विस्तार को देखते हुए इस पर अनेक ग्रंथ लिखे गए, जिसका नगरीय समाज की जनता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

भारत में नगरीय समाजशास्त्र

भारत में समाजशास्त्र एक नई विधा है। सर्वप्रथम, 1920 में मुंबई विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पैट्रिक गेडेस द्वारा समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की गई थी। 1951 की जनगणना से ज्ञात हुआ कि भारत की आबादी काफी बढ़ गई, तो उसी समय समाज वैज्ञानिकों ने नगरों के अध्ययन पर ध्यान दिया। 1970 के दशक तक भारत में नगरीय समाजशास्त्र की संकल्पना अधिक महत्त्वपूर्ण होने लगी। ग्रामीण इलाकों से शहरों की ओर पलायन, नगरीय विकास, सामाजिक स्तरीकरण, शिक्षा एवं नृजातीय समस्याएँ उत्पन्न होने लगीं। 1980 और 1990 के दशक के दौरान नगरीकरण की

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पद्धतियों एवं प्रक्रिया पर विशेष अध्ययन प्रारंभ हुए। नगरीकरण पर गठित राष्ट्रीय आयोग ने भी नगरीय समस्याओं को निम्न स्तर से समझने की कोशिश की तथा नगरीकरण पर विशेष ध्यान देने का सुझाव दिया। सुनियोजित नगरीकरण द्वारा भारत के निवासियों के जीवन में बदलाव आ सकता है।

प्रमुख प्रारंभिक प्रभाव

शुरुआत में नगरीय समाजशास्त्र को पहचान देने वाली दो विचारधाराओं का उदय हुआ।

शिकागो विचारधारा

नगरीय समाजशास्त्र को एक संस्थागत पहचान दिलाने के लिए शिकागो की समाजशास्त्रीय विचारधारा को इसका श्रेय दिया जाता है। समाजशास्त्रियों ने 20वीं शताब्दी के शुरुआती दौर में शिकागो में नगरीय पर्यावरण का अध्ययन प्रारंभ किया। शिकागो विचारधारा ने मानव विज्ञान तथा समाजशास्त्रीय सिद्धांतों को एक साथ मिलाने का प्रयास किया। यह विचारधारा नगरीय संस्कृति की समर्थक थी। शिकागो विचारधारा के समाजशास्त्री उस समय अमेरिकन समाज की केंद्रीय समस्या में अध्ययनरत थे। इस विचारधारा के अन्य समाजशास्त्री डार्विनवादी विचारधारा से जुड़े हुए थे, जिसे मानव पारिस्थितिकी के नाम से जाना गया। नगरों के जीवन तथा संरचनाओं का वर्गीस एवं अन्य विद्वानों ने अध्ययन किया। इन समस्त अध्ययनों ने शिकागो में नगरीय समाजशास्त्र की ऐसी विचारधारा को उत्पन्न किया, जिसे शिकागो विचारधारा कहा गया।

सामुदायिक अध्ययन

नगरीय समाजशास्त्र को पहचान दिलाने वाली दूसरी शाखा को सामुदायिक अध्ययन के नाम से जाना गया। 1960 और 1970 के दशकों में नगरीय समस्याएँ उन मान्यताओं से एकदम भिन्न हो गई थीं, जिन्होंने शिकागो विचारधारा को प्रकट किया था। सामाजिक-सांस्कृतिक अब कोई नया मुद्दा नहीं रह गया था। रोजमर्रा का जीवन और नगरीय प्रक्रिया दोनों पर राज्यों की दखल जन सुविधाओं पर नियंत्रण प्रमुख हो गया था। इस दृष्टि से नगरीय समाजशास्त्र एक नया रूप ले चुका था। अमेरिका में इसे अनेक प्रकार के निर्देश प्राप्त हो रहे थे। अमेरिकी बहुलवादी राजनीतिक विद्वानों ने नगरीय सामाजिक मूल्यांकन में राजनीतिक टकराव उत्पन्न कर दिया था। इन निर्देशों ने नगरीय समाजशास्त्र में संरचनावादी दृष्टिकोण को विकसित किया। संरचनावादियों ने नगरीय जीवन पर विशेष ध्यान दिया। शिकागो विचारधारा से संबंधित विभिन्न समाजशास्त्री इस स्वरूप के समर्थक बने।

नगरीय समाजशास्त्र की प्रकृति एवं संभावनाएँ

नगरीय समाजशास्त्र की प्रकृति एवं उसकी संभावनाएँ अत्यधिक व्यापक हैं, क्योंकि इसमें नगरीय जीवन तथा इसके परिवर्तित वातावरण का संपूर्ण परिदृश्य समाहित है। यह सामाजिक मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, लोक प्रशासन एवं सामाजिक कार्यों से अपनी विषय-वस्तु प्राप्त करता है। इसकी अर्थशास्त्र में अतिव्याप्ति है क्योंकि लोकनीति, कराधान व लोकव्यय इसका परिप्रेक्ष्य है। यह सामूहिक संस्कृति के बारे में मानव विज्ञान का अध्ययन करता है। अनेक दृष्टिकोणों से नगरीय समाजशास्त्र में विशेषज्ञों की रुचि कस्बा तथा नगर योजनाकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षा, नस्लीय संबंधों, आवासन तथा नगरीय विकास व पुनर्वास के क्षेत्र के विभिन्न मानव विशेषज्ञों से परस्पर व्याप्त है।

समुदाय—कभी-कभी समुदाय शब्द को साधारण आवास में अथवा एक ही क्षेत्र में निवास कर रहे समस्त व्यक्तियों की समष्टि के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। डेविस ने समुदाय की परिभाषा करते हुए कहा कि यह सबसे छोटे भू-भागीय समूह, जो सामाजिक जीवन के समस्त पक्षों को ग्रहण कर सकता है। यह सबसे छोटा सामाजिक स्थानीय समूह है, जो संपूर्ण समाज हो सकता है और बहुधा है। मैकाइवर तथा पेज के अनुसार समुदाय की आधारभूत कसौटी यह है कि किसी व्यक्ति के समस्त सामाजिक संबंध इसके अंदर पाये जाते हैं।

पारिस्थितिकी—पारिस्थितिकी वह विज्ञान है, जो सजीव पदार्थों तथा पर्यावरण के मध्य संबंध का अध्ययन करता है। आवास मानव जीवन के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में अपना प्रभाव प्रकट करता है। सामान्य पारिस्थितिकी के रॉबर्ट ई. जनक पार्क ने सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग किया। कुछ विचारकों ने वनस्पति तथा मानव पारिस्थितिकी के मध्य निकट समानता को स्पष्ट किया है। हॉवली ने मानव पारिस्थितिकी को विज्ञान माना है, जो समुदाय के विकास तथा संगठन का अध्ययन करता है।

नगरीय पारिस्थितिकी एक विचार से जुड़ी हुई है, जो शिकागो विचारधारा की देन माना जाता था, जो नगरीय संगठन की तुलना जैविक जीव से करता है। यह नगरवाद की पारिस्थितिकी है, जो कि नगर से संबंधित है। यह पारिस्थितिकीय आयाम एक अनिवार्य उपागम है, जो नगरीय जीवन के उन मौलिक, भौगोलिक व स्थूल पक्षों, जो सामाजिक-मानसिक स्वरूप की आकांक्षा, सहमति व सुविचारित क्रिया से भिन्न है, को सम्मिलित करता है।

भारतीय नगरों के मामले में, नगरों के आंतरिक भाग को मोहल्ला अथवा परंपरा, जिनमें अनन्य रूप से किसी विशेष पेशे से संबद्ध या जाति समूह के लोग निवास करते थे, में विभक्त किया जा सकता है। तत्पश्चात सामाजिक संगठन के स्वरूप का अध्ययन किया जाता है। यह परिप्रेक्ष्य नगरीय जीवन के आधारभूत स्वरूपों, जिनका विकास नगरीकरण का प्रत्यक्ष परिणाम है, से संबंधित है। एक विधा के रूप में समाजशास्त्र ने नगरीकरण की प्रक्रिया के इस आयाम में सर्वाधिक योगदान दिया है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. पश्चिमी देशों में नगरीय समाजशास्त्र के विकास की व्याख्या कीजिए।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उत्तर–नगरीय समाजशास्त्र का प्रारंभ 19वीं शताब्दी में ही हो गया था। विश्व में जितनी तीव्रता से नगरों का विकास हुआ, उतनी ही तीव्रता से नगरों में समस्याएँ भी उत्पन्न होने लगी हैं। औद्योगिक क्रांति के बाद 19वीं शताब्दी के अंत तथा 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में नगरीय समाजशास्त्र का विकास समाजशास्त्र की एक शाखा के रूप में पश्चिमी देशों में हुआ। मैक्स वेबर तथा जार्ज सिमेल जैसे प्रमुख समाजशास्त्रियों ने औद्योगिक क्रांति के बाद नगरीकरण की तेजी से बदलती प्रक्रिया के कारण बढ़ते सामाजिक अलगाव पर ध्यान दिया। जार्ज सिमेल को नगरीय समाजशास्त्र का जनक कहा जाता है क्योंकि इस क्षेत्र में उनका प्रमुख योगदान रहा है।

समाजशास्त्री रेने मारियर ने सर्वप्रथम नगर पर एक मोनोग्राफ तैयार किया, जो सन् 1910 में प्रकाशित हुआ। तीन प्रारंभिक समाजशास्त्रीय कृतियाँ प्रकाशित हुईं। जार्ज सिमेल की 'डाई ग्रॉसटाटे एंड डास जीस्टेस्लेबेन', 1903, मैक्स बेवर का 'टाई स्टाट' अर्थात् द सिटी, 1921 एवं आर. मारियर की 'ले विलेज एट ला विले', 1929।

राउण्ट्री ने 1901 में 'पावर्टी : ए स्टडी ऑफ टाउन लाइफ' तथा 'ए स्टडी ऑफ डेस्टीट्यूशन इन यॉर्क इंग्लैंड' लिखा था। वास्तविक प्रेरणा राबर्ट ई. पार्क से प्राप्त हुई थी। उनका निबंध, 'द सिटी' प्रथम बार 1915 में अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी में प्रकाशित हुआ था। उस वर्ष 'अमेरिकन' सोशियोलॉजिकल सोसाइटी' की एक वार्षिक बैठक में नगरीय समाजशास्त्र पर निबंध प्रस्तुत किये गये, जिन्हें ई. डब्ल्यू बर्गेस ने 'द अर्बन कम्यूनिटी' शीर्षक से प्रकाशित किया।

समाजशास्त्र अधिक विशेषज्ञता युक्त होकर सामान्य विज्ञान था। यह मान्यता प्राप्त करने के लिए संघर्षरत था। यह अर्थात् मान्यता इसे धीरे-धीरे मिल रही थी। संयुक्त राज्य अमेरिका में नगरीय समाजशास्त्र को 1925 में उस समय मान्यता प्राप्त हुई, जब 'अमेरिकन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी' की एक वार्षिक बैठक नगरीय समाजशास्त्र को समर्पित की गयी।

इस बैठक के निबंधों को ई. डब्ल्यू बर्गेस ने 'द अर्बन कम्यूनिटी' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित किया था। इससे पहले राबर्ट ई. पार्क, बर्गेस और मैकेन्जी ने 'द सिटी' (1925) का प्रकाशन किया था, जिसमें उन लेखों का संकलन था, जो उन्होंने गत दशक में प्रकाशित किये थे। इन दो रचनाओं को इस विषय की आधारशिला रखने का श्रेय प्राप्त है। नगरीय समाजशास्त्र पर सर्वप्रथम पुस्तक 1929 में प्रकाशित हुई। इसके साथ ही नगरीय समाजशास्त्र के क्षेत्र एवं विस्तार का मार्ग प्रशस्त हुआ।

प्रश्न 2. भारत में नगरीय समाजशास्त्र के उदय पर एक टिप्पणी लिखो।

उत्तर–20वीं शताब्दी के प्रारंभ में औद्योगिक क्रांति के बाद समाजशास्त्र की शाखा के रूप में नगरीय समाजशास्त्र का उदय पश्चिमी देशों में हुआ था। एक विचारधारा के रूप में भारत में नगरीय समाजशास्त्र का विकास मुंबई में हुआ। प्रमुख समाजशास्त्री पैट्रिक गेडेस ने 1915 में मुंबई विश्वविद्यालय में एक योजनाकार के रूप में योगदान दिया। सर्वप्रथम, 1920 में मुंबई विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पैट्रिक गेडेस द्वारा समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की गई थी। 1914 से 1924 की अवधि में उन्होंने 50 भारतीय नगरीय केंद्रों का नैदानिक और उपचार सर्वेक्षण किया। उन्होंने 1918 में 'टाउन प्लानिंग टवोड्स सिटी डेवलपमेंट : 'ए रिपोर्ट टू द डरबर ऑफ इंदोर' के दो खंड प्रकाशित किये (बोर्डमैन, 1976) तथापि उनके प्रयास भारत में इस विषय की नींव रखने में सफल नहीं हुए। कारण यह था कि भारत में समाजशास्त्र स्वयं ही नवजात अवस्था में था। नगरीय समाजशास्त्र का क्षेत्र 1960 के पश्चात् ही भारतीय विश्वविद्यालय में सुना गया। एम.एस.ए. राव (1974) के अनुसार इस उपेक्षा के मुख्यत: दो कारण थे–

प्रथम, समाजशास्त्रियों के अनुसार भारत में नगरीकरण का स्तर कम होने के कारण यहाँ ग्रामीण और नगरीय समाजशास्त्र के मध्य विभेद करना निरर्थक है।

द्वितीय, भारतीय संदर्भ में परंपरागत नगर और ग्राम के बीच द्विभाजन नहीं है, क्योंकि दोनों एक ही सभ्यता के घटक थे। सतीश सबरवाल (1977) ने 'कन्ट्रीब्यूशन्स टू इंडियन सोशियोलॉजी' में प्रकाशित 'इंडियन अर्बेनिज्म : ए सोशियो-हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव' (Indian Urbanism : A Sociology-Historical Porspective) शीर्षक अपने निबंध में लिखा था–

'साठ वर्ष पहले पैट्रिक गेडेस ने मुंबई विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र का प्रोफेसर नियुक्त होने से पहले अपनी रिपोर्ट 'रिप्लानिंग, ऑफ सिक्स टाउन्स इन बॉम्बे प्रेजीडेन्सी' (1915) (Replanning of Six Towns in Bombay Presidency) लिखी थी। गेडेस इस पद पर काफी कम समय तक रहे और उनके उतराधिकारी जी.एस. घुर्ये ने 'सोशियोलॉजिकल बुलेटिन' के मार्च 1953 के अंक में 'सिटीज ऑफ इंडिया' लिखी। इसके मध्य की अवधि में और उसके बाद समाजशास्त्रियों और दूसरों ने भी यदा-कदा भारत में नगरीय प्रघटना का उल्लेख किया है, किंतु यह क्षेत्र अभी हाल तक निर्णायक बौद्धिक ऐतिहासिक घटनाओं से विशेष रूप से रहित है। आंकड़ों के झुरमुट से होकर निकलने वाले महत्त्वपूर्ण विचार स्पष्ट रूप से मार्ग प्रशस्त करते हैं। नगरीकरण की प्रक्रिया पद्धतियाँ एवं प्रवृत्तियों पर 1980 तथा 1990 के दशक में विशेष रूप से अध्ययन प्रारंभ किगा गया, लेकिन महानगरीकरण तथा क्षेत्रीय योजनाओं पर उतना ध्यान नहीं दिया गया, जितना कि ग्रामीण क्षेत्रों से शहारों की ओर होने वाले पलायन पर ध्यान दिया गया। नगरों में आस-पास बसने वाली गंदी बस्तियाँ भी अध्ययन का केन्द्र बिन्दु बनी। इसके साथ ही लोगों की अवैध तरीके से

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

इधर-उधर बसाने की प्रक्रिया की ओर भी विद्वानों द्वारा ध्यान दिया गया।

प्रश्न 3. 'शिकागो विचारधारा' पर एक आलेख तैयार कीजिए।

उत्तर–नगरीय समाजशास्त्र के क्षेत्र में अमरीका के शिकागो विश्वविद्यालय के समाजशास्त्रियों का बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। शिकागो विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग से जुड़े हुए कुछ विद्वानों ने 1920 से लेकर 1940 के दशकों तक इस विषय पर काफी गहन चिंतन किया। यह समाजशास्त्र के क्षेत्र में शिकागो विचारधारा के नाम से जाना जाता है। उस विचारधारा के प्रमुख प्रवर्तकों में राबर्ट ई. पार्क, वर्गीस एवं लुई वर्थ का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शिकागो विचारधारा के अंतर्गत दो परिपेक्ष्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं–

1. पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य एवं
2. नगरवाद एक जीवन शैली के रूप में।

1. पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य–इस परिप्रेक्ष्य को प्रतिपादकों ने भौतिक विज्ञान से लिया है। पारिस्थितिकी विज्ञान के अंतर्गत यही अध्ययन किया जाता है कि कैसे कोई प्राणी वातावरण के साथ समाहित करता है। इसी तथ्य को आधार मानकर समाजशास्त्रियों ने यह विचार व्यक्त किया है कि नए नगरीय परिवेश में कोई व्यक्ति या समाज कैसे अपने आपको समायोजित करता है। इस विचारधारा को मानने वाले विद्वानों का विचार था कि नगरों के विकास का सीधा संबंध भौतिक वातावरण से है। नगरीय समाज की उत्पत्ति और विकास आमतौर पर नदी-घाटी, उपजाऊ समतल क्षेत्र एवं यातायात व व्यापार से जुड़े क्षेत्रों में होता है अर्थात नगरों का विकास कोई अचानक घटना नहीं है। मानव अपनी सुविधाओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही कहीं पर स्थायी निवास करना चाहता है।

जब लोग एक जगह इकट्ठे रहने लगते हैं तो वहां एक नए प्रकार के समाज का विकास होता है, पर इस इकट्ठे होने की प्रक्रिया में एक और प्रक्रिया मिली हुई है कि नगरों के अंतर्गत वे ही लोग इकट्ठा हो पाते हैं, जिनकी वहां पर आवश्यकता है। नगर स्वाभाविक रूप से धीरे-धीरे ऐसे लोगों का चयन करता है, जैसे-जहां उद्योग लगाने की संभावना है, वहां उद्योग से जुड़े लोग इकट्ठे होते हैं। जहां व्यापार की संभावना होती है, वहां व्यापार से जुड़े लोग स्वाभाविक रूप से रहना पसंद करते हैं और इस प्रकार से नगर धीरे-धीरे स्वत: व्यवस्थित और विकसित होता रहता है।

2. नगरवाद एक जीवन शैली के रूप में-नगरवाद को लुईस वर्थ ने एक ऐसी जीवन शैली माना है, जो नगरीय जीवन को महत्त्वपूर्ण बनाती है। ई.डब्ल्यू. वर्गीस ने नगर में रहने वाले लोगों के जीवन एवं नगर की संरचनाओं का अध्ययन किया है। इन सभी अध्ययनों ने मिलकर शिकागो में नगरीय समाजशास्त्र की एक ऐसी विचारधारा को विकसित किया, जिसे शिकागो विचारधारा के नाम से जाना गया।

प्रश्न 4. नगरीय समाजशास्त्र में लुईस वर्थ के योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर–लुईस वर्थ शिकागो विचारधारा के प्रमुख समर्थकों में से एक थे। उन्होंने सिमेल से प्रेरणा प्राप्त की थी। उन्होंने शिकागो में रूस से निर्वासित यहूदी बस्तियों पर अध्ययन किया था। लुईस वर्थ तथा उनके सहयोगियों ने नगर की स्थानीय प्रणालियों की जांच-पड़ताल की। इन बस्तियों में रहने वाले लोगों में जीवित रहने एवं विकास करने के लिए अत्यधिक प्रतिस्पर्धा दिखाई देती थी। वे नगरीय क्षेत्र को एक बंद स्थली मानते थे, जहां का परिवेश चारों तरफ से बंद था।

लुईस वर्थ की कृति नगरीय समाजशास्त्र के रूप की उत्कृष्ट पराकाष्ठा है। उन्होंने नगरवासियों के जीवन की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन किया तथा यह समझने की कोशिश की कि उनका जीवन किस प्रकार विशिष्ट नगरीय संस्कृति को विकसित करता है। इस प्रकार नगरवाद लोगों की आवश्यकता का प्रमुख केंद्र बन गया। उनके नगरीय सिद्धांत ने अनेक ऐसे कारकों को प्रदर्शित किया, जो नगर की सर्वस्वीकारीय सामाजिक विशेषताएँ मानी जाती थीं। उन्होंने नगर की विशेष विशेषताओं की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित किया और नगर की जीवन शैली को मानव संगठन का एक प्रमुख रूप माना।

लुईस वर्थ ने नगरवाद पर विस्तृत रूप से लिखा है तथा विषय-वस्तु की जटिलता का वर्णन इस प्रकार किया है–

(1) नगर एक बिंदु मात्र नहीं है, जहाँ सीमित स्थान में लोगों की बड़ी संख्या केंद्रित है, वरन् यह उन समस्त विशिष्ट क्षेत्रों, जिनमें मनुष्य प्राय: एक-दूसरे से भिन्नता रख सकता है, में जटिल विषम जातीय भी है।

(2) नगर उन सामाजिक संस्थाओं, जो आदिम, देहाती और कृषक समाज कहलाता है, से सर्वाधिक आश्चर्यजनक विषमता को प्रकट करता है।

(3) महानगरीय जनसंख्या को समझने के लिए, जिन साधनों को अनुकूल बनाया गया है, वे उन साधनों से भिन्न हैं, जो अधिक सरल व अधिक सजातीय समाजों के लिये उपयुक्त हैं।

(4) इससे यह तथ्य विदित होता है कि नगर को समझने के प्रयास में इसकी संरचना करने वाले मानवीय घटकों के निर्धारण के लिए व्यापक साँख्यिकीय जांच करना आवश्यक है।

(5) वे अन्य समाजों की भांति लिंग और आयु के मामले में भिन्न हैं, जैसे-जैसे हम एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाते

www.neerajbooks.com